राष्ट्रीय संगोष्ठी का मूल विषय :

"रवीन्द्रनाथ की रचनाधर्मिता और उनका जीवन- दर्शन "

आयोजन तिथि :

24, 25, 26 नवम्बर 2018

आयोजन का स्थान :

हिंदी भवन परिसर, विश्वभारती, शांतिनिकेतन (पं.ब) 731235

आयोजक :

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद , दर्शन भवन , नई दिल्ली

और

हिंदी भवन , विश्वभारती , शांतिनिकेतन -731235

आयोजन समिति :

<table>
<tr><td colspan="3">संरक्षक

उपाचार्य
विश्वभारती शांतिनिकेतन -731235 (प.ब)</td></tr>
<tr>
<td>सभापति
प्रोफेसर हरिश्चन्द्र मिश्र
हिंदी भवन ,
विश्वभारती शांतिनिकेतन -731235 (पं.ब)
दूरभाष : 09434375497
ई-मेल
: profharishchandramishra@gmail.com</td>
<td>सचिव
डॉ रेखा ओझा
दर्शन एवं तुलनात्मक धर्म विभाग ,
विश्वभारती शांतिनिकेतन -731235 (पं.ब)
दूरभाष : 07001891545
ई-मेल :
drrekha3@gmail.com
विश्वभारती शांतिनिकेतन -731235 (प.ब)</td>
<td>सह संरक्षक
प्रोफेसर रवीन्द्रनाथ मिश्र
हिंदी भवन
विश्वभारती शांतिनिकेतन -731235 (पं.ब)
दूरभाष :09937351207</td>
</tr>
</table>

तिथि सूचना :

सारांश प्रेषित करने की तिथि : 15 अक्तूबर 2018

पूर्ण आलेख प्रषित करने की तिथि : 20 नवम्बर 2018

स्वीकृति सूचना तिथि – 21 नवम्बर 2018

कार्यक्रम सूची

24 नवम्बर 2018 उदधाटन समय :10 am -11:30am चाय अंतराल : 11.30 am – 12:00 pm प्रथम सत्र : 12:00 pm – 1:30 pm भोजन अंतराल :1:30 pm -2:30 द्वितीय सत्र : 3:30 pm - 5:00pm चाय : 5:00pm - 5:30 pm सांस्कृतिक संध्या : 6:30 pm – 8:30 pm हिंदी भवन के छात्र - छात्राओं द्वारा।	25 नवम्बर 2018 तृतीय सत्र : 10:00 am – 1:00 pm भोजन अंतराल : 1:00 pm – 2:00 pm चतुर्थ सत्र : 3:00 pm – 5:00pm चाय : 5:00pm - 5:30 pm सांस्कृतिक संध्या : 6:00 pm – 8:30 pm संगीत भवन के छात्र - छात्राओं द्वारा।	26 नवम्बर 2018 पंचम सत्र : 10:00 am – 1:00 pm भोजन अंतराल : 1:00 pm – 2:00 pm षष्ठ सत्र : 3:00 pm – 5:00pm (पंजीकृत प्रतियोगियों द्वारा) समापन सत्र : 5:15pm - 6:00 pm सांस्कृतिक संध्या : 6:30 pm- 8:30 pm

रवीन्द्रनाथ टैगोर की सृजनशीलता और जीवन -दर्शन।

विषय का प्रारूप, वैशिष्ट्य एवं राष्ट्रीय आवश्यकता । प्रस्तुत विषय की प्रासंगिकता आज की समसामयिक भूमिका में खोजी जा सकती है । आजादी के संघर्ष के दौरान रवीन्द्रनाथ एक ऐसी प्रतिभा बनकर सामने आये जिन्होंने देश को उच्चता, सांस्कृतिक विशिष्टता एवं नयी कलात्मक सौन्दर्य दृष्टि दी । अपने पूरे जीवन काल में बदलाव और परिवर्तन की अद्‌भुत क्षमता रखने वाले रवीन्द्रनाथ ने मनुष्य मात्र को विश्व-मानव दर्शन तक पहुँचाने की चेष्टा की । देश को वैचारिक खुराक दिया । गाँधी आदि राष्ट्रीय संघर्ष से जुड़े बड़े-बड़े नेताओं को उन्होंने वैचारिक संबल प्रदान किया । मुक्ति की कामना से छटपटाते हुए देश में रवीन्द्रनाथ ने हमेशा मुक्त जीवन की तलाश की इसीलिए उन्होंने शांतिनिकेतन जैसे मुक्त विद्यालय की स्थापना की । भारतीय युवा छात्रों को उन्होंने मुक्त मानसिक विकास के लिए प्रेरित किया । जीवन को और परंपरा को समझने लिए उन्होंने मनुष्य मात्र को अपने-अपने लोक साहित्य की ओर उन्मुख करने की कोशिश की। इस मार्फत उन्होंने मनुष्यता को अतीत में तलाशने की कोशिश क़ी , वर्तमान के ऐतिहासिक पुरुष की तलाश की और उसमें बचपन से लेकर जीवन के अंत तक जीवन-निर्माण को खोजने की कोशिश की और समस्त छात्र वर्ग को लोकानुरूक्त होने के लिए बार-बार उन्होंने प्रेरित किया और लोक साहित्य समझने के लिए प्रेरित किया ।

रवीन्द्रनाथ जीवन के आरम्भ से ही स्वतंत्रताचेत्ता थे और किसी भी रूप में आबद्धविकास को वे स्वीकार नहीं करते थे । उन्होंने हर दम अपने को बदला । यह बदलाव इतना प्रमुख हो गया था कि बार-बार आवास भी बदले जा रहे थे , लेखन कला में परिवर्तन हो रहा था , चित्रकला में परिवर्तन हो रहा था , संगीत कला में परिवर्तन हो रहा था । यह परिवर्तन समय की अपेक्षा बनता चला जा रहा था । जिस किसी भी दिशा में देखा जाए रवीन्द्रनाथ नया करते हैं , नया होते हैं, और नया चाहते हैं ।

अपने युग जीवन की नवीन अपेक्षाओं को समझने वाले रवीन्द्रनाथ बडे मेधावी पुरूष थे और इसलिए उन्होंने अपनी प्रतिभा से पूरे विश्व को प्रभावित किया और जीवन के हर क्षेत्र में भी विदेशी मूल्यात्मक चीजों से जुड़ने की कोशिश की और प्रत्येक देश के विविध क्षेत्रगत जीवनदर्शन को अपने भारतीय संदर्भ से मूल्यात्मक बनाने की कोशिश की । जीवनगत तमाम संघर्षों के बीच विश्व के विविध पहलू को रवीन्द्रनाथ ने परखा और उसका भारतीयकरण किया । भारतीय आवश्यकता के संदर्भ में उन्होंने पाश्चात्य नवीनता को ग्रहण किया और श्रीनिकेतन के निर्माण के साथ उसे उन्होंने प्रमाणित भी किया । विश्व-भर की यात्राओं और नाना प्रकार के लेखन की प्रक्रिया में उन्होंने जिस राष्ट्रव्यापी सहकारिता की खोज की थी वह तत्कालीन भारत का मूल्य बन गया था । मूल्यान्वेषण की यह प्रक्रिया उनके जीवन में सदा चलती रही और हमेशा वे भावी संभावनाओं की तलाश भी करते रहे ।

यही कारण है वे जितना बनाते गये उतना ही बदलते भी गये । यह बदलाव उनकी प्रासंगिकता की सबसे बड़ी पहचान है । वृद्धावस्था में चित्रकला की ओर आकर्षित होना और शिशुसाहित्य की रचना करना , लोक साहित्य की ओर आकर्षित होना और इसी परंपरा में बाउलों को और उनके साहित्य को करीब से देखना , प्रभावित होना और उसके आधार पर रचना करना उनके लोकान्विति का प्रमाण है।

आजीवन रचनात्मक प्रतिभा से जुडा व्यक्ति वृद्धावस्था में भी अपने बचपन से नया होता जाता है । वह नये संगीत की खोज करता है, नये नृत्य की खोज करता है । नये काव्य, नाटक की खोज करता है, नयी भाषा की तलाश करता है और संपूर्ण मानव जीवन को नया करना चाहता है । इसलिए वह पश्चिम के बड़े-बड़े वैज्ञानिकों

से भेंट करता है । बड़े-बड़े दार्शनिकों को ,साहित्यकों से भेंट करता है लेकिन सब ओर से देखता है अपने देश को । हर ओर से देश को देखना ही इस संगोष्ठी का विषय है । इस प्रकार इस अध्ययन की राष्ट्रीय आवश्यकता प्रतिपादित होती है और रवीन्द्रनाथ के वैशिष्ट्य को मूल्यांकित करने का प्रयास भी है।

दिये गये शीर्षकों के आधार पर इस अध्ययन को विस्तार दिया जा सकता है।

वस्तुतः कविगुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविख्यात प्रतिभावान् व्यक्ति थे । उन्होंने केवल भारत की चेतना को नवीनता की दिशा नहीं दी अपितु पूरे विश्व का पथप्रदर्शन किया। मानव- मात्र्ा को उसकी जडता से बाहर आने के लिए प्रयास किया।

रवीन्द्रनाथ का जीवन-अनुभव बडा व्यापक था। एक विशाल जमींदार परिवार में जन्म लेने के कारण उन्हें जीवन के आरम्भ से ही जीवनगत वैविध्य मिला था। विभिन्न देशों के लोग उनके घर आते। विभिन्न कलाओं का प्रदर्शन होता। विभिन्न भाषा - भाषियों से सम्पर्क हुआ। उनके घर पर हमेशा विविध कलाओं की प्रस्तुति होती रही है। उनसे प्रभावित होना स्वाभाविक है। इस प्रभाव की प्रक्रिया में रवीन्द्रनाथ की चेतना सम्पूर्णतः नयी हुई। जातीय चेतना के संदर्भ को नवीनता के सन्दर्भ में उन्होंने पुनः निर्मित किया। इस निर्मिति के द्वारा उन्होंने समकालीन सन्दर्भ में भारतीयता को नया रूप दिया। कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं था जिसमें उनके चिन्तन की गतिविधि न हो। उनका चिन्तन समस्त मनुष्य से सम्बद्ध रहा है। रवीन्द्रनाथ समय के अनुकूल जीवन-दर्शन की निर्मिति में संलग्न थे और अतीत के तमाम दर्शनों की पुर्नव्याख्या भी की है। उनके लेखन और रचना में व्यक्त दर्शनों की खोज करना भी राष्ट्रीय आवश्यकता है। इसी अपेक्षा में राष्ट्रीय संगोष्ठी के विषय को किया गया।

हरिश्चन्द्र मिश्र

राष्ट्रीय संगोष्ठी हेतु निर्धारित विषय :

1. रविन्द्रनाथ का शैशव और उनकी चेतना का निर्माण।
2. रवीन्द्रनाथ और शांतिनिकेतन : जीवन की तलाश।
3. रवीन्द्रनाथ का साहित्य और उसमें व्याप्त जीवन-दर्शन |
   क) कविता और दर्शन |
   ख) काव्य रचना के बदलाव के संदर्भ में दार्शनिक विदलन |
   ग)रचना के संदर्भ में रवीन्द्रनाथ का नवीनता के प्रति आग्रह और उसकी प्रतिबद्धत |
   घ)गीतांगली और उसमें व्याप्त जीवन दर्शन की सृजनशीलता |
4. रविन्द्रनाथ के उपन्यासों में अभिव्यंजित जीवन-दर्शन |
5. रवीन्द्रनाथ के नाटकों में जीवन दर्शन का रचनात्मक स्वरूप |
6. रविन्द्रनाथ के उपन्यासों में अभिव्यंजित जीवन-दर्शन |

7. कहानियों में बदलता रवीन्द्रनाथ का जीवन-बोध |
8. शिशु साहित्य और रवीन्द्र दर्शन |
9. लोकसाहित्य के संदर्भ में रवीन्द्रनाथ का रचनात्मक चेतना |
10. रवीन्द्र संगीत और जीवन-दर्शन |
11. रवीन्द्र संगीत और विश्व संगीत |
12. रवीन्द्रनाथ का विश्वभ्रमण और उनका जीवन-दर्शन का प्रसार |
13. रवीन्द्रसंगीत की समसामयिक अपेक्षा में बदलाव की भूमिका |
14. रवीन्द्र गीतिनाट्य की सामाजिक भूमिका |
15. आधुनिक जीवन-दर्शन में रवीन्द्रनाथ की गीतिनाट्य की परख |
16. रवीन्द्रनाथ पात्रों में बिखरे जीवन-दर्शन |
17. चित्रकला और रवीन्द्रनाथ |
18. रवीन्द्रचित्रों के झांकता जीवन-दर्शन |
19. श्रीनिकेतन के निर्माण में उनका सामजिक बोध |
20. सहकारिता और रवीन्द्रनाथ |
21. रवीन्द्रनाथ की समवाय-दृष्टि |
22. रवीन्द्रनाथ के भाषणों में मुखरित जीवन-बोध |
23. बाउल और रवीन्द्रनाथ |
24. बाउल दर्शन से रवीन्द्र-दर्शन की सापेक्षता |
25. रवीन्द्रनाथ की सृजनशीलता में उगता उनका जीवन दर्शन |

26. रवीन्द्रनाथ के जीवन दर्शन की रचनात्मक परिणीति |
27. महात्मा गांधी और रवीन्द्रनाथ |
28. स्वतन्त्रता संग्राम और रवीन्द्रनाथ : विचारो का टककर |